कक्षा में सीसी टीवी की जगह नहीं

शिवानी नाग

शिक्षण संस्थानों में व्यवस्थागत सुधारों के अन्तर्गत कई नवाचार होते रहे हैं। इनमें से कुछ तो सुविधा और सुरक्षा से सीधे तौर पर जुड़ते हैं तो कुछ मानवीय व्यवहार में बदलाव की अपेक्षा करते हैं। स्कूलों में सीसी टीवी कैमरा लगाया जाना इसी कड़ी में है।
सीसी टीवी लगाए जाने का विचार कॉरपोरेट जगत से आया हुआ है। इसके मूल में सुरक्षा और निगरानी बताई जा रही है। कॉरपोरेट जगत में कार्य निष्पादन, गुणवत्ता, प्रभावकारिता, चूक, जवाबदेही और आज्ञापालन जैसे विषय, प्रबन्धन और श्रमिक वर्ग के बीच सम्बन्धों के चश्मे से देखे जाते हैं। इसके मूल में अविश्वास, शोषण, दोषारोपण और अधिकारों का संघर्ष है। ऐसे में स्कूलों में सीसी टीवी लगाए जाने का निर्णय कई सवाल खड़े करता है। यह लेख इन्हीं सवालों और इनके निहितार्थ को शिक्षा के शैक्षिक-सामाजिक सरोकारों की रोशनी में देखने की कोशिश करता है। सं.

हाल के दिनों में स्कूल परिसर के भीतर छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करना चिन्ता का एक मुख्य विषय बन कर उभरा है। इसके समाधान के लिए कक्षा में सीसी टीवी की मौजूदगी को बतौर हल प्रस्तुत किया जा रहा है। इस हल के कई समर्थकों का तो यहाँ तक मानना है कि कक्षा में सीसी टीवी कैमरा लग जाने से शिक्षक भी समय पर कक्षा में आएँगे और अच्छी तरह पढ़ाएँगे भी। बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सीसी टीवी द्वारा की गई रिकॉर्डिंग माँ-बाप और शिक्षा अधिकारी भी अपने-अपने फोन पर देख पाएँगे। इस मसले पर समाचार चैनलों पर कई बहसें सुनने का मौका मिला। इन बहसों को सुन कर मन में उठ रहे सवालों के जवाब तो कम मिले, पर कई नए प्रश्न उठ खड़े हुए। इस लेख में इन्हीं कुछ प्रश्नों और इस सुझाव से उत्साहित न हो पाने के कुछ कारणों को साझा करने का प्रयास किया है।

सीसी टीवी को अन्य संसाधन की तुलना में महत्त्व देना कितना सही ?

शिक्षकों का कक्षा में नियमित रूप से आना और तैयारी कर के आना शिक्षा की गुणवत्ता से जोड़ा जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा निःसंदेह एक गम्भीर चिन्ता का विषय है। पर गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सीसी टीवी को प्राथमिकता देना कितना सही है– वह भी तब जब कई सरकारी स्कूलों में स्थायी शिक्षकों की नियुक्ति और अन्य ज़रूरी शैक्षिक संसाधनों (इंफ्रास्ट्रक्चर) की व्यवस्था केवल पैसों की कमी की वजह से स्थगित कर दी जाती है? जिस देश में शिक्षा पर सरकार द्वारा किए जाने वाले खर्च पर हमेशा असंतुष्टि ही व्यक्त की गई हो, उस देश में शिक्षक की नियुक्ति, शिक्षकों की तैयारी और स्कूली संसाधन जैसे– कमरे, पुस्तकों से भरे हुए पुस्तकालय, खेल के मैदान, ज़रूरी सामग्री से लैस प्रयोगशालाएँ, साफ़ पानी और शौचालय इत्यादि की जगह सीसी टीवी पर ध्यान देना क्या सच में गुणवत्ता के हक में है?

सीसी टीवी के सन्दर्भ में हो रही बहस में इन प्रश्नों पर भी विमर्श होना चाहिए।

सीसी टीवी की निगरानी में कक्षाओं का स्वरूप

कक्षा में सीसी टीवी लगाए जाने के तर्क पर उठ रहे सवालों का आधार केवल खर्च सम्बन्धी नहीं है। क्या पर्याप्त आर्थिक संसाधनों के होने पर यह सुझाव एक प्रभावी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के हक में होता? कल्पना कीजिए कि आप एक शिक्षक हैं और जिस कक्षा में आप पढ़ाते हैं उसे कोई कैमरे के ज़रिए बाहर से देख रहा है। ऐसे सन्दर्भ में वहाँ सीखने-सिखाने का माहौल कैसा होगा? क्या एक शिक्षक शिक्षण पद्धति का प्रयोग करने के लिए स्वयं को प्रेरित महसूस कर पाएगा, यह जानते हुए कि सभी प्रयोग हमेशा सफल नहीं होते? क्या एक शिक्षक कक्षा में एक ऐसी बहस को या किसी ऐसी सामूहिक क्रिया को प्रोत्साहित कर पाएगा जिसमें भाग लेते हुए विद्यार्थी अत्यन्त उत्साहित हो जाएँ और बाहर से देखने वाले को लगे कि जैसे शिक्षक का विद्यार्थियों पर कोई नियंत्रण नहीं? क्या कोई शिक्षक बच्चों से कुछ कठिन सवाल पूछने या उनके समक्ष कुछ चुनौतीपूर्ण शैक्षिक समस्याएँ प्रस्तुत करने की हिम्मत जुटा पाएगा, यह जानते हुए कि अगर बच्चों ने तुरन्त उसका हल न बताया तो बाहर से देखने वाले को लग सकता है कि वह उन्हें कुछ सिखा नहीं पाया? क्या कोई शिक्षक ऐसे माहौल में कभी बच्चों के साथ अनौपचारिक महसूस करते हुए उन्हें कोई चुटकुला, गाना, कविता या कहानी सुना पाएगा जिसका पाठ्यक्रम से कोई सीधा सम्बन्ध न हो, इस डर में कि कोई देख कर यह न समझे कि वह समय बर्बाद कर रहा है? सघन निगरानी के ऐसे माहौल में कोई शिक्षक अपने बच्चो को पितृसत्तात्मक और जातिवादी ढाँचों को चुनौती देने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर पाएगा? कई सारे अभिभावक इस यथास्थिति के पोषक हो सकते हैं, गैर बराबरी के समर्थक हो सकते हैं। इस स्थिति में विद्यार्थियों को तार्किक और आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए खुले विचार-विमर्श का प्रयास सघन निगरानी का शिकार हो सकता है।

बच्चों की परिस्थिति तो शायद और भी ज़्यादा दयनीय हो जाए। ऐसी निगरानी वाली कक्षाओं में क्या बच्चे मासूम शरारत कर पाएँगे और एक दूसरे को अपने दिल के राज़ कह पाएँगे? शायद गलती करने और उनसे सीखने के मौके भी कम हो जाएँ, जब उनकी हरेक गलती पर न जाने कितने लोगों की सख्त निगाहें हैं। एक ऐसे दौर में जहाँ स्कूल और घर दोनों ही जगह कड़ी प्रतिस्पर्धा का माहौल तैयार करने की कोशिश की जाती है, ज़रा सोचिए एक बच्चे की स्थिति जिसके माँ-बाप शिक्षक से ज़्यादा अपने बच्चे पर नज़र टिकाए हुए होंगे और उसके घर पहुँचते ही उस पर कुछ ऐसे प्रश्नों की बौछार कर देंगे—"जब टीचर ने सवाल किया तुमने अपना हाथ खड़ा क्यों नहीं किया?" "तुमने जवाब वैसे क्यों नहीं दिया जैसा मैंने घर पर सिखा कर भेजा था?" "जब शिक्षक कुछ कह रहा था, तुम बाहर क्यों देख रहे थे"? "तुमने अपने घर के अन्दर की बात टीचर को क्यों बताई?" क्या ऐसे माहौल में एक बच्चा जो कुछ पारिवारिक या सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, कभी उन्हें अपने सहपाठियों या शिक्षक के साथ साझा कर पाएगा?

ऐसे माहौल में तो सबसे सुरक्षित विकल्प होगा कि शिक्षक सिर्फ 'सिखाए' और विद्यार्थी सिर्फ 'सीखें'— चुपचाप, आज्ञाकारितापूर्वक, हमेशा अनुशासन बनाए हुए और सिर्फ तभी बोलते हुए जब उनसे कुछ पूछा जाए। ऐसे शैक्षिक वातावरण में कहाँ कोई यथास्थिति को चुनौती दे पाएगा! ऐसी ज़गह में शिक्षा का सिर्फ हस्तान्तरण सम्भव है। ऐसी शिक्षा परिवर्तनकारी नहीं हो सकती। कई वर्षों से 'क्रिटिकल पेडागॉजी' से जुड़े दार्शनिकों और शिक्षकों ने यह समझाने की कोशिश की है कि बच्चों को खाली पात्र मानते हुए एकतरफा दिया ज्ञान शिक्षा नहीं है। एक कक्षा में गलती करने, गलतियों से सीखने, और एक दूसरे से सीखने के मौके उपलब्ध होने चाहिए और ऐसी कक्षा की रचना संदेह की

दृष्टि से हो रही निगरानी के अन्दर नहीं की जा सकती। यहाँ पर ज़रूरी है कि उन मान्यताओं को भी परखने का प्रयास किया जाए जिनसे कक्षाओं को सुरक्षित, पारदर्शी और ज़वाबदेह बनाने का हल सीसी टीवी में मिलता है।

अविश्वसनीय शिक्षक और हमेशा विश्वसनीय माता-पिता

यह विश्वास कि कक्षा में सीसी टीवी लगने से और उनके ज़रिए माता-पिता द्वारा कक्षा की प्रक्रिया को देख पाने से बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा की गुणवत्ता तय हो सकती है, इस मान्यता पर आधारित है कि शिक्षक अविश्वसनीय है और माँ-बाप हमेशा विश्वसनीय। शिक्षक बच्चों का भला-बुरा नहीं समझ सकते और अभिभावक हमेशा बच्चों के भले बुरे की सही समझ रखते हैं। यह मान्यता वास्तविकता से कहीं दूर है। स्कूल परिसर अथवा कक्षा के भीतर घटित कई ऐसे वृत्तान्त मिल जाएँगे जहाँ एक संवेदनशील शिक्षक के साथ एक सहमे हुए बच्चे ने उसके साथ घर या आस पड़ोस में हो रही हिंसा या भेदभाव के अनुभव साझा किए हैं। ऐसे कई वृत्तान्त और मिल जाएँगे जहाँ स्कूल में पढ़ रही लड़कियों ने किसी शिक्षक को विश्वासपात्र मान, स्कूल की सहायता से घर वालों द्वारा किया जा रहा बाल विवाह रुकवाया है। न जाने ऐसे भी कितने वृत्तान्त और हैं जहाँ एक संवदेनशील और सतर्क शिक्षक ने किसी बच्चे के व्यवहार में अचानक आए परिवर्तन से सचेत होते हुए यह जानने की कोशिश की है कि कहीं घर या ट्यूशन या कहीं और वह किसी शारीरिक या यौन हिंसा का शिकार तो नहीं हो रहा। कई बार कक्षा की चारदीवारी के भीतर बच्चों ने अपने मुश्किल अनुभवों या ऐसी आकाँक्षाओं को साझा करने की सुरक्षित ज़गह पाई है, जिन्हें वह कई बार अपने अभिभावकों से भी नहीं कह पाते। घर पर डॉक्टर या इंजीनियर बनने का दबाव झेलती हुई बच्ची अपने हिन्दी के शिक्षक को अपनी कविताएँ सुनाती है। एक और बच्ची अपने माँ-बाप की अपेक्षाओं से परे खुद के कलाकार बनने के सपने को अपनी कला के शिक्षक के साथ बाँटती है। क्या हमने नहीं सुनी वे घटनाएँ जहाँ किसी परीक्षा में फेल होने पर एक विद्यार्थी इसलिए ख़ुदक़ुशी कर लेता है क्योंकि वह अपना परीक्षाफल अपने माँ-बाप को बताने का साहस नहीं कर पाता। अपनी निराशा से कहीं ज़्यादा असहनीय और भयभीत करने वाली निराशा उसके अभिभावकों की है। इन घटनाओं के बारे में बात करने का तात्पर्य यह बिलकुल नहीं है कि कक्षाएँ हमेशा सुरक्षित, भेदभाव रहित और संवेदनशील जगह होती हैं और शिक्षक हमेशा बच्चों के हक के लिए प्रतिबद्ध। पर इस निष्कर्ष पर पहुँचना कि सीसी टीवी द्वारा माँ-बाप की कक्षा पर नज़र रहने से शिक्षण में बदलाव आएगा, किसी तर्कपूर्ण मान्यता की उपज नहीं है।

शिक्षकों की निगरानी बनाम शिक्षकों की तैयारी

सीसी टीवी पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बच्चों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी थोप देना कहीं-न-कहीं हमारा और शिक्षा अधिकारियों का ध्यान कुछ अहम् मुद्दों से भी भटकाता है और ये हैं– शिक्षक की तैयारी और उसके लिए सहायक स्थितियाँ निर्मित करने की मंशा और कोशिशें। अगर हमें लगता है कि शिक्षक तैयारी के साथ कक्षा में नहीं आते या अच्छा नहीं पढ़ाते और उनकी मौजूदगी के बावजूद बच्चे सुरक्षित नहीं, तो क्या उन पर नज़र रखने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी उनकी तैयारी और उनका समर्थन नहीं है। पर यह ज़िम्मेदारी तो हमने न जाने कितनी ही बी.एड. की डिग्री बेच रहीं छोटी-छोटी दुकानों के हाथों में छोड़ दी है। शायद ही इन दुकानों की रुचि शैक्षणिक दृष्टि से मज़बूत और सामाजिक रूप से संवेदनशील शिक्षकों को तैयार करने में हो। ऐसे में सीसी टीवी की उपस्थिति शिक्षकों को बेहतर और ज़वाबदेह बनाने से ज़्यादा, उन्हें बस ज़्यादा सावधान रहने के लिए ही प्रेरित कर पाएगी।

सुरक्षा की अवधारणाओं के बारे में फिर से सोचने की ज़रूरत

एक शैक्षणिक संस्थान में सुरक्षा को केवल निगरानी के माध्यम से सुनिश्चित कराने का विचार कहीं न कहीं भोलेपन से भी ग्रस्त है। हरियाणा के स्कूल में हुए जिस हादसे ने हम सबका ध्यान सीसी टीवी पर टिका दिया वह हादसा आखिर था क्या– एक बच्चा स्कूल के एक शौचालय में मरा हुआ पाया गया। कक्षा में सीसी टीवी की मौज़ूदगी इस हादसे को कैसे रोक पाती, मैं नहीं जानती। मैं यह भी नहीं जानती कि क्या स्कूल परिसर की हर सम्भव जगह में सीसी टीवी को लगाया जा भी सकता है? पर सवाल यहाँ सिर्फ सीसी टीवी की मौज़ूदगी या अनुपस्थिति का नहीं है। अगर पुलिस द्वारा दिए गए हाल ही के कथन में सत्यता है, तो प्रद्युमन का क़त्ल किसी खतरनाक गाड़ी चालक ने नहीं बल्कि उसी के स्कूल में पढ़ने वाले एक अन्य छात्र ने किया। इस छात्र को यह स्कूल और समाज एक ज़िन्दगी की महत्ता नहीं सिखा पाया, सिखा पाया तो केवल स्कूल और घर का ऐसा डर जो किसी की जान तक लेने को मज़बूर कर सकता है। अगर एक बच्चा स्कूल में होने वाली अभिभावक-शिक्षक मीटिंग से इतना भयभीत हो सकता है कि उसे स्थगित कराने के लिए वह किसी की जान तक ले सके, तो क्या उसके इस डर का कारण केवल एक 'दुष्ट और भयानक' शिक्षक रहा होगा या एक ऐसे घर का परिवेश जहाँ शिक्षक द्वारा की गई शिकायत, घर पर उस बच्चे के लिए मानसिक या शारीरिक हिंसा का कारण बन सकती है? इस प्रश्न का दायरा सिर्फ इतना भर नहीं है।

कहीं हम शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों में सहानभूति, संवेदनशीलता और मानव जीवन और हकों के प्रति सम्मान के मूल्यों को स्थापित करने की ज़रूरत और ज़िम्मेदारी से भाग तो नहीं रहे। कम-से-कम इस घटना के बाद होने वाले विमर्शों में तो यह चिन्ता कहीं नज़र नहीं आती। सीसी टीवी से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है ऐसी शिक्षण प्रणालियों और पाठ्यक्रमों को विकसित करने की जो विद्यार्थियों को ऐसा इंसान बनाने की ओर प्रेरित कर सकें जो अन्य इंसानों की शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक हितों को समझेंगे और इनसे जुड़ी सीमाओं को पहचान कर उनका सम्मान करेंगे।

आखिर में, अगर हम शिक्षा को एकतरफा ज्ञान वितरण की प्रक्रिया नहीं मानते और शिक्षा में सामाजिक परिवर्तन की संभावना तलाशते हैं, शिक्षण प्रक्रियाओं से यह उम्मीद रखते हैं कि वे एक अति स्तरीकृत और गैर-बराबर समाज से कट्टरपंथ, पूर्वाग्रहों और अतार्किकता की जड़ों को उखाड़ने की पृष्ठभूमि तैयार कर पाएँगी, तो कक्षाओं को ऐसी ज़गह बनाना पड़ेगी जहाँ बिना किसी डर के ईमानदार संवाद संभव हो। पूर्वाग्रहों और रूढ़िवादी अवधारणाओं को जड़ से निकाल पाने के लिए ऐसी ज़गहों की ज़रूरत होगी जो संवेदनशील हों और 'नॉन-जजमेंटल' हों। ऐसी ज़गह माइक्रोफोन और सीसी टीवी से लैस नहीं हो सकतीं, जहाँ संवाद ईमानदार न होकर, केवल कैमरा के लिए किया गया 'प्रदर्शन' होकर रह जाए।

शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों में ऐसी क्षमता का विकास कर पाने में सक्षम होने चाहिए जिनसे वे अपने कार्यों, अपनी सोच और उनमें निहित मान्यताओं और पूर्वाग्रहों पर आत्मचिन्तन कर सकें। कक्षा में सीसी टीवी कैमरा केवल शिक्षकों को तभी तक सावधान रहने के लिए प्रेरित कर सकता है जब तक कि कैमरे की नज़र उन पर है।

शिवानी नाग पिछले तीन दशक से शिक्षा और सामाजिक मसलों पर लेखन एवं अध्यापन कर्म से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली के स्कूल ऑफ एजुकेशन स्टडीज़ में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।
सम्पर्कः shivani@aud.ac.in